प्रभावक आचार्यदेव श्री जिनहरिसागरसूरीश्वर

[ले० मुनिश्री कान्तिसागरजी]

आचार्य पद की महत्ता

जैन शासन में आचार्यों का स्थान श्री तीर्थंकर भगवान् से दूसरे नम्बर पर ही आता है क्योंकि जिस समय भव्यात्माओं को मोक्ष-मार्ग दिखा कर श्रीतीर्थंकर भगवान् अजरामर पद को प्राप्त हो जाते हैं, उस समय उनके विरहकाल में द्वादशाङ्गी रूप सम्पूर्ण प्रवचन को और जैन-संघ के विशिष्ट उत्तरदायित्व को आचार्य देव ही धारण करते हैं। अतएव प्रवचन-प्रभावक प्रातःस्मरणीय आचार्य-देवों के पुनीत चरित्रों को जानना प्रत्येक आत्महितैषी का कर्तव्य हो जाता है। अतः एक ऐसे ही आचार्यदेव के दिव्य जीवन से परिचय कराया जाता है। जिसकी अतुल-कीर्त्ति-किरणों से मारवाड का प्रत्येक प्रदेश आज प्रकाशमान है।

पूर्व सम्बन्ध

श्रीमन्महावीर भगवान् के ६७वें पट्टधर श्रीजिनभक्ति सूरिजी म० के पट्टशिष्य श्रीप्रीतिसागरजी महाराजने वि० की १९वीं-शताब्दी में यति समुदाय में बढ़ते हुए शिथिलाचार को और प्रभुपूजा विरोधी ढुंढक मत के प्रचार को देखकर वाचनाचार्य श्री अमृतधर्मजी म० और महोपाध्याय श्रीक्षमाकल्याणजी महाराज-जो कि आपके शिष्य-प्रशिष्य थे— के साथ श्रीसिद्धाचल तीर्थाधिराज पर क्रियोद्धार किया था। महोपाध्याय श्रीक्षमाकल्याणजी म० की शिष्य परम्परा में परमोपकारी सिद्धान्तदधि गणाधीश्वर श्रीसुखसागरजी महाराज हुए। आपका समुदाय खरतर गच्छीय साधुओं में अधिक प्राचीन एवं सुविस्तृत रूपसे वर्तमान है। श्रीसुखसागरजी महाराज की समुदाय के अधिनायक आबाल-ब्रह्मचारी प्रवचन-प्रभावक पूज्य श्रीजिनहरिसागर सूरीश्वरजी महाराज थे। आपका ही पुनीत चरित्र प्रस्तुत लेख में प्रकाशित किया जाता है।

कुमार हरिसिंह

जोधपुर राज्य के नागोर परगने में प्राकृतिक सौन्दर्य से हराभरा 'रोहिणा' नाम का एक छोटा सा गांव है। वहां खेती-पशुपालन आदि स्वावलम्बी कर्म वाले और युद्धभूमि में दुश्मनों से लोहा लेनेवाले, क्षत्रियोचित गुणों से स्वतन्त्र जीवन वाले, जाट वंशीय भुरिया खानदान के लोगों की जमींदारी है। जमींदारों के प्रधान पुरुष— श्रीहनुमन्तसिंहजी की धर्मपत्नी श्रीमती केसरदेवी की पवित्र कूँख से वि० सं० १९४९ के मार्गशीर्ष शुक्ला ७ के दिन दिव्य मुहूर्त्त में हमारे चरित-नायक का जन्म हुआ था। हरि-सूर्य और सिंह के समान तेजोमय भव्य आकृति और महापुरुषों के प्रधान लक्षणों से युक्त अपने सुकुमार को देखकर माता-पिता ने आपका गुणानुरूप नाम 'श्रीहरिसिंह' रखा था।

सफल संयोग

अपनी अलौकिक लीलाओं से माता-पितादि परिजनों को आनन्दित करते हुए कुमार हरिसिंह जब करीब ६-७ वर्ष के हुए तब अपने पिता के साथ पूज्य गणाधीश्वर श्री भगवान्सागरजी महाराज-जो कि गृहस्थावस्था में आपके चाचा लगते थे — के दर्शन के लिये फलोदी (मारवाड़) गये। बाल लीला के साथ आपने वंदन करके श्रीगुरुमहाराज की पापहारिणी चरणधूलि को अपने मस्तक में लगाई। श्रीगुरुदेव ने दिव्य-दृष्टि से आप में भावी प्रभाव-

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कता के प्रशस्त चिन्ह पाये। लोक-कल्याण की भावना से प्रेरित हो गुरु-महाराज ने श्रीहनुमन्तसिंह जी को उपदेश दिया कि तुम्हारे ५ लड़के हैं। उनमें से इस मध्यम कुमार को आप हमें दे दो। क्योंकि यह कुमार बड़ा भारी साधु होगा, और अपने उपदेशों से जैनशासन की महती सेवा करेगा। इसको देने से तुमको भी अपूर्व धर्म-लाभ होगा। गुरुमहाराज की इस पुण्य प्रेरणा से प्रेरित हो वीरहृदयी हनुमन्तसिंहजी ने बड़ी वीरता के साथ अपने प्राण प्यारे पुत्र को धर्म के नाम पर श्रीगुरुमहाराज को भेंट कर दिया। गुरुदेव और कुमार के इस सफल संयोग से 'सोने में सुगन्ध' की कहावत चरितार्थ हुई। धन्य गुरु! धन्य पिता!! धन्य कुमार!!!

साधुता के अङ्कुर

श्री गुरु महाराज ने अपनी वृद्धावस्था के कारण कुमार की विशेष देखभाल और पठन-पाठन का भार अपने सहयोगी महातपस्वी श्री छगनसागरजी महाराज को दिया। पूज्य तपस्वीजी के योग्य अनुशासन में महामहिम शालिनी मेधावाले कुमार ने साधु क्रिया के सूत्र थोड़े ही समय में सीख लिये। पूर्व जन्म के पुण्योदय की प्रबलता से आठ वर्ष की बाल्य अवस्था में गुरु महाराज की परम दया से साधुता के बीज अङ्कुरित हो गये।

साधु श्री हरिसागरजी

कुमार हरिसिंह जब कुछ अधिक साढ़े आठ वर्ष के हुए, तब युवकों का सा जोश, और वृद्धों का सा अनुभव रखते थे। गुरु महाराज ने माता पिता की और स्थानीय (फलोदी) जैन संघ की अनुमति से आपकी दीक्षा का प्रशस्त मुहुर्त्त १९५७ आषाढ़ कृष्ण ५ के दिन निर्धारित किया। अपने आयुष्य की अवधि निकट आ जाने से श्री गुरु महाराज ने श्री संघ से खमत-खामणा करते हुए अन्तिम आज्ञा दी कि 'हरिसिंह को योग्य अवस्था होने पर इसे मेरा उत्तराधिकारी मानना'। संघ के मुखिया महा-तपस्वी श्रीछगनसागरजी म० ने अपने पूज्य गणाधीश्वरजी की इस आज्ञा को शिरोधार्य करके, उनको निश्चिन्त बना दिया। गणि श्रीभगवान्सागरजी महाराज आत्मरमण करते हुए दिव्य लोक को सिधार गये तब संघ में एक दम शोक छा गया। परंतु गुरुदेव के प्रतिनिधि स्वरूप कुमार हरिसिंह के दीक्षा-महोत्सव ने शोक को मिटा कर अपूर्व आनन्द को फैला दिया। श्री संघ के सामने बड़े भारी समारोह के साथ पू० त० श्री छगनसागरजी महाराज ने कुमार हरिसिंह को उसी पूर्व निश्चित सुमुहुर्त्त में भगवती दीक्षा प्रदान कर पूज्य गणाधीश्वर श्री भगवानसागरजी महाराज के शिष्य 'श्री हरिसागरजी' नाम से उद्घोषित किये।

चरित नायक के गुरु भाई

गणाधीश्वर पूज्य श्री भगवानसागरजी महाराज साहब के शिष्य अध्यात्म योगी चैतन्यसागरजी म० उर्फ चिदानन्दजी महाराज महोपाध्याय श्री सुमतिसागरजी महाराज, मुनि श्री धनसागरजी महाराज, मुनि श्री तेजसागरजी महाराज, श्री त्रैलोक्यसागरजी महाराज और हमारे चरितनायक आचार्य श्री जिनहरिसागरसूरीश्वरजी महाराज हुए।

आदर्श जीवन

पूज्य श्री छगनसागरजी महाराज की वृद्धावस्था होने से और हमारे चरितनायक की बाल अवस्था होने से सं० १९५७ से १९६५ तक के चातुर्मास लोहावट और फलोदी (मारवाड़) में ही हुए। इस सानुकूल संयोग में ज्ञान-तप और अवस्था से स्थिविर पद को पाये हुए पूज्य श्री छगनसागरजी महाराज ने आपको संस्कृत व प्राकृत भाषा को पढ़ाने के साथ-साथ प्रकरणों का तत्त्व-ज्ञान और आगमों का मौलिक रहस्य भली प्रकार से समझा दिया। विद्या-गुरु की परम दया और आपकी प्रौढ़ प्रज्ञा ने आपके व्यक्तित्व को आदर्श और उन्नत बना दिया।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चरितनायक गणाधीश

श्री भगवान्सागरजी महाराज की अन्तिम आज्ञानुसार हमारे चरितनायक को महातपस्वी श्री छगनसागर जी महाराज ने सं० १९६६ द्वि० श्रा० शु० ५ को अपने ५२ वें उपवास की महातपश्चर्या के पुनीत दिन में जोधपुर, फलोदी, तीवरी, जेतारण, पाली आदि अन्यान्य नगरों के उपस्थित जैन संघ के सामने महा समारोह के साथ लोहावट में गणाधीश पद से अलंकृत किया। आपके गणाधीश पद के समय उपस्थित साधुओं में मुख्य श्री त्रैलोक्यसागरजी महाराज आदि, साध्वियों में श्री दीपश्रीजी आदि, श्रावकों में लोहावट के श्रीयुत् गेनमलजी कोचर, फलोदी के श्रीयुत् सुजानमलजी गोलेछा—स्व० फूलचंदजी गोलेछा, जोधपुर के स्व० कानमलजी पटवा आदि के नाम उल्लेखनीय हैं। शान्त दान्त धीर गुण योग्य गणाधीश को पाकर साधु-साध्वी-श्रावक-श्राविका रूप चतुर्विध संघ ने अपना अहोभाग्य माना।

चरितनायक और समुदाय वृद्धि

हमारे चरितनायक गणाधीश्वर श्री हरिसागरजी महाराज के अनुशासन में करीब सवासो साधु-साध्वियों की अभिवृद्धि हुई है। इस समय आपकी आज्ञा में करीब दो सौ साधु-साध्वियाँ वर्तमान हैं। साधुओं में कई महात्मा आबाल-ब्रह्मचारी, प्रखरवक्ता, महातपस्वी, विद्वान् और कवि रूप से जैन शासन की सेवा कर रहे हैं। साध्वियों के तीन समुदाय (१-प्रवर्त्तिनी श्री भावश्रीजी का, २–प्र० श्री पुण्यश्रीजी का और ३—प्र० श्री सिंहश्रीजी का है)। इनमें भी कई आजीवन ब्रह्मचारिणी, विशिष्ट व्याख्यान दात्री, महातपस्विनी एवं विदुषी प्रचारिका रूप में जैन सिद्धान्तों का प्रचार कर रही हैं। अन्यान्य गच्छीय साधुओं के जैसे कच्छ, काठियावाड, गुजरात आदि जैन प्रधान देशों में आपके साधु-साध्वी प्रचार करते हो हैं परन्तु मारवाड़, मालवा, मेवाड़, उ० प्र०, म० प्र०, आदि अजैन प्रधान विकट प्रदेशों में भी प्रायः ये लोग ही सुचारु प्रचार कर रहे हैं।

चरितनायक और प्रतिष्ठाएँ

हमारे चरितनायक की अध्यक्षता में कई प्रभु मन्दिरों की और गुरु मन्दिरों की पुण्य प्रतिष्ठाएँ हुई हैं। सुजानगढ़ में श्रीपनेचंदजी सिंघी के बनाये श्रीपार्श्वनाथ स्वामी के मन्दिर की, केलु (जोधपुर) में पंचायती श्रीऋषभदेव स्वामी के मन्दिर की, मोहनबाडी (जयपुर) में सेठ श्रीदुलीचंदजी हमीरमलजी गोलेछा द्वारा विराजमान किये श्रीपार्श्वनाथ स्वामी की, श्रीसागरमलजी सिरहमलजी संचेती के बनाये श्रीनवपद पट्ट की, कोटे में दिवान बाहादुर सेठ केसरीसिंहजी के, और हाथरस (उ० प्र०) में सेठ बिहारीलाल मोहकमचंदजी के बनाये श्रीदादा-गुरु के मन्दिरों की, लोहावट में पंचायती गुरु मन्दिर में गणनायक श्रीसुखसागरजी महाराज साहब की और ग० श्रीभगवान्सागरजी म० एवं श्रीछगनसागरजी म० के मूर्त्ति चरणों की प्रतिष्ठाएं उल्लेखनीय है।

चरितनायक और उद्यापन

हमारे चरितनायक की अध्यक्षता में कई धर्मप्रेमी श्रीमान् श्रावकों ने अपनी २ तपस्याओं की पूर्णाहूति के उपलक्ष में बड़े-बड़े उद्यापन महोत्सव किये हैं। उनमें फलोदी (मारवाड़) में श्रीरतनलालजी गोलेछा का किया हुआ श्रीनवपदजो का, कोटे में दिवान बहादुर सेठ केसरोसिंहजी का किया हुआ पौष-दशमी का, जयपुर में सेठ गोकलचन्दजी पुंगलिया, सेठ हमीरमलजी गोलेछा, सेठ सागरमलजो सिरहमलजो, सेठ विजयचन्दजी पालेचा, आदि के किये हुए ज्ञान पंचमी, नवपदजी और वीसस्थानकजो के तीवरी (मारवाड़) में श्रीमती जेठीवाई का किया हुआ ज्ञान-पंचमी का, और देहली के लाला केसरचन्दजो बोहरा के किये हुए ज्ञानपंचमो और नवपदजो के उद्यापन महोत्सव विशेष उल्लेखनीय हुए हैं।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चरित नायक-और संघ

हमारे चरितनायक के पवित्र उपदेश से प्रेरित हो कई भव्यात्माओं ने तारणहार तीर्थों की यात्रा के लिये छरी-पालक बड़े-बड़े संघ निकाले हैं। उनमें श्रीजेसलमेर महा-तीर्थ के लिए फलोदी से पहली वार सेठ सहसमलजी गोलेछा द्वारा, और दूसरी बार सेठ सुगनमलजी गोलेछा की धर्मपत्नी श्रीमती राधाबाई द्वारा, श्रीबारेजा पार्श्व-नाथ तीर्थ के लिये मांगरोल से पहली बार सेठ जमनादास मोरारजी द्वारा और दूसरी बार सेठ मकनजी कानजी द्वारा, श्रीअंजारा पार्श्वनाथ तीर्थ के लिये वेरावलसे खरतर-गच्छ पंचायती द्वारा, तालध्वज महातीर्थ के लिये श्रीपा-लीताना से आहोर निवासी सेठ चन्दनमल छोगाजी द्वारा, तीर्थाधिराज श्रीसिद्धाचलजी के लिए अहमदाबाद से सेठ डाह्याभाई द्वारा और देहली से श्री हस्तीनापुर महातीर्थ के लिये लाला चांदमलजी घेवरिया की धर्मपत्नी श्रीमती कपूरीदेवी द्वारा आदि २ छरी-पालते हुए बड़े-बड़े संघ विशेष उल्लेख योग्य हुए हैं।

चरित नायक और संस्थाएं

हमारे चरितनायक के अमोघ उपदेश से कई शहरों में शिक्षालय, पुस्तकालय, मित्रमण्डल आदि कई संस्थाएं स्थापित हुई हैं। पालीताना में श्रीजिनदत्तसूरि ब्रह्मचर्याश्रम जामनगर में श्रीखरतरगच्छ ज्ञानमन्दिर-जैनशाला, लोहावट में जैनमित्रमण्डल, श्रीहरिसागर जैनपुस्तकालय, कलकत्ते में श्रीश्वेताम्बर जैन सेवासंघ-विद्यालय, बालुचर (मुर्शि-दाबाद) में श्रीहरिसागर जैन ज्ञानमन्दिर-जैन पाठशाला आदि विशिष्ट संस्थाएँ समाजसेवा और जैन संस्कृति का प्रचार कर रही हैं।

चरित नायक और पुरातत्त्वरक्षा

हमारे चरित नायक ने श्रीसिद्धाचल तीर्थाधिराज पर 'खरतर वसही' के प्राचीन इतिहास की सुरक्षा के निमित्त प्रचण्ड आन्दोलन करके श्रीआनन्दजी कल्याणजी की पेढ़ी के किसी मताभिनिवेशी मेनेजर के हटाया हुआ 'श्रीखरतर वसही' नाम का साइन बोर्ड उसी पेढ़ी के जरिये वापिस लगवाया। वही श्रीखरतर गच्छ की बिखरी हुई शक्तिकों संगठित करने के लिये श्रीखरतरगच्छ संघ सम्मेलन का वृहद् आयोजन करवाया। बीकानेर में श्रीक्षमाकल्याणजी के और जयपुर में पंचायती के प्राचीन हस्तलिखित जैनज्ञान भण्डार का जीर्णोद्धार करवाया। कई तीर्थों के-मूर्त्तियों के प्राचीन शिलालेखों का, प्रभावक आचार्यों की कई प्राचीन पट्टावलियों का, और पुण्य प्रशस्तियों का वृहत् संग्रह आपने तैयार किया है।

चरित नायक और साहित्यिक प्रवृत्ति

हमारे चरितनायक श्री उववाई सूत्र का सटीक हिन्दी अनुवाद दादागुरु श्री जिनदत्तसूरिजी महाराज की ऐति-सिक पूजा, महातपस्वी श्री छगनसागर जी महाराज का दिव्य जीवनवृत्त, हरि-विलास स्तवनावली के दो भाग, आदि कई ग्रन्थों का नव सर्जन किया है। लोहावट से प्रकाशित होनेवाले श्री सुखसागर ज्ञान बिन्दु जिनकी संख्या इस समय ५० है—आपकी साहित्यक भावना का मधुर फल है। इन्हीं ज्ञान बिन्दुओं से सुप्रसिद्ध इतिहास लेखक पं० लालचन्द भगवानदास गाँधी द्वारा लिखित श्रीजिनप्रभ-सूरिजी म० का ऐतिहासिक जीवनचरित्र, जयानन्द-केवली चरित्र, भाव प्रकरण, संबोध-सत्तरी आदि महत्वपूर्ण साहित्य ग्रन्थों का प्रकाशन हुआ है। श्री हिन्दी जैनागम-सुमति प्रकाशन कार्यालय कोटा से प्रकाशित होनेवाले-जैनागम साहित्य के लिये आप श्री के सदुपदेश से भागलपुर के रहीस रायबहादुर सुखराजजी ने, उनके सुपुत्र बाबू रायकुमार सिंह जी ने अजीमगंज के राजा विजयसिंह जो की माता श्री सुगनकुमारीजी ने-और कई श्रीमानों ने काफी सहायता पहुँचाई है। आपकी अमूल्य-साहित्यक सम्मति का स्व० बाबू पूरणचन्दजी नाहर M. A. B. L.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

बिहार पुरातत्व विभाग के प्रमुख प्रोफेसर जी० सी० चन्द्रा साहब, राय बहादुर बृजमोहन जी व्यास आदि जैन अजैन विद्वान बहुत आदर करते रहे हैं।

चरित्र नायक का विहार

हमारे चरित नायक ने अपने ३७ वर्ष के लम्बे दीक्षा-पर्याय में संयम की साधना, तीर्थों की स्पर्शना और लोक-कल्याण की विशिष्ट भावना से प्रेरित हो काठियावाड़, गुजरात, राजपूताना-मारवाड़, मेवाड़, मालवा, यू० पी० पंजाब, बिहार, बंगाल आदि प्रदेशों में विहार करके कर्म वाद, अनेकान्तवाद, अहिंसावाद आदि मुख्य जैन सिद्धान्तों का प्रचार किया है। आपके हृदयंगम उपदेशों से प्रभावित होकर कई बंगाली भाइयों ने आजीवन मत्स्य-मांस और मदिरा का त्याग करके जीवन को आदर्श बनाया है। आप ने तीर्थाधिराज श्री सिद्धाचल-तालध्वज-गिरनार-प्रभास पाटन-पोर्तुगीज साम्राज्य के दीवतीर्थ-शंखेश्वर-तारंगा अहमदाबाद-पाटण-पालनपुर-आबू-देलवाड़ा-राणकपुर-जैसलमेर-लोद्रवा, नाकोड़ा-करेड़ा पार्श्वनाथ-केशरियानाथ-अजमेर-जयपुर-देहली-हस्तिनापुर-सौरिपुर-कम्पिलपुर-रत्नपुरी-अयोध्या-कानपुर-लखनऊ-बनारस-सिंहपुरी-चन्द्रपुरी-पटना-चम्पापुरी-श्रीसमेतशिखरजी - कलकत्ता - मुर्शिदाबाद-भद्दिलपुर आदि तारणहार तीर्थों की यात्राएँ की हैं।

चरित्रनायक का आचार्य पद

हमारे चरितनायक को १९६३ में म० त० श्री छगनसागरजी महाराज ने और जोधपुर आदि शहरों के प्रमुख जैन संघ ने लोहावट में गणाधीश्वर पूज्य श्री सुखसागरजी महाराज के समुदाय के गणाधीश पद से सुचारु रूप से विभूषित किया था। फिर भी अजीमगंज (मुर्शिदाबाद) के राजमान्य धर्मप्रेमी जैन संघ ने कलकत्ता, देहली, लखनऊ, फलोदी आदि नगरों के प्रमुख व्यक्तियों के विशाल जनसमूह के बीच महा समारोह के साथ वि०सं० १९९२ मार्गशीर्ष शुद १४ को विजय मुहुर्त्त में 'श्रीजिनहरिसागरसूरीश्वर जी महाराज की जय' ध्वनि के साथ अभिनन्दन पूर्वक आचार्य पद से आपको सम्मानित किया।

उपसंहार

पूज्यपाद प्रातःस्मरणीय जैनाचार्य श्रीजिनहरिसागर सूरीश्वरजी महाराज का यह संक्षिप्त चरित्र है। हमारे चरितनायक आचार्यदेव श्री और आपकी आज्ञा को मानने वाले लगभग २०० साधु-साध्वियाँ हैं। एवं आचार्य श्री के शिष्य म० गणाधीश मुनि श्री हेमेन्द्र सागर जी म० मुनि श्री दर्शनसागरजी म०, मु० श्री तीर्थ सागरजी म०, एवं मुनि श्री कल्याणसागरजी महाराज आदि मुनि महोदय जैन संघ की अभिवृद्धि करते हुए अपने आदर्श जीवन के प्रकाश से भव्यात्माओं को प्रकाशित करें।

हमारे चरितनायक दो वर्ष तक जेसलमेर में विराजे और वहाँ प्राचीन भण्डार का निरीक्षण किया। इतना ही नहीं पर ५ पंडित और ५ लहिये (लेखक) रखकर गुरुदेव श्री ने प्राचीन अलभ्य ग्रन्थों की प्रतिलिपियाँ कराईं, संशोधनात्मक कार्यों में विशेष श्रम करने से गुरुदेव का स्वास्थ्य बिगड़ता गया। जेसलमेर से गुरुदेव ने विहार किया, रास्ते में विशेष तबीयत बिगड़ने से आचार्य श्री ने फरमाया—मैं अपना अन्तिम समय किसी तीर्थ पर व्यतीत करना चाहता हूँ अतः आप श्री फलौदी पार्श्वनाथ मेड़तारोड़ पधारे, स्वास्थ्य प्रतिदिन गिरता ही गया, आहार लेना भी बन्द किया और अर्हम् अर्हम् ध्वनि लगाते रहे। दो दिन-रात निरन्तर ध्वनि करते रहे, अन्त में जबान बन्द हो गई तब बीकानेर, जोधपुर आदि से बड़े २ वैद्य, डाक्टर आये किन्तु गुरुदेव श्री ने अपना आयुष्य सन्निकट जानकर 'अप्पाणं वोसिरामि' कर दिया। संवत् २००६ पोषवदि ८ मङ्गलवार प्रातःकाल सूर्योदय के पश्चात् आप श्री सर्व चतुर्विध संघ को विलखता हुआ छोड़कर स्वर्ग पधार गये।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org